स्वतंत्र एवं निष्पक्ष बिहार के पंचायत चुनाव के मुद्दे एवं चुनौतियां

सेमिनार

3 सितम्बर, 2016

एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स, एवं बिहार इलेक्शन वाच के संयुक्त तत्तावाधान में स्थानीय अनुग्रह नारायण सिंह समाज अध्ययन एवं शोध संस्थान, पटना (बिहार) में **"स्वतंत्र एवं निष्पक्ष बिहार के पंचायत चुनाव के मुद्दे एवं चुनौतियां "** बिषय पर आयोजित सेमिनार का उद्घाटन **बिहार बिधान परिषद के सभापति अवधेश नारायण सिंह** ने दीप जला कर किया।

पंचायत चुनाव के अनुभव, सीख, चुनौतियां एवं मुद्दे

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए बिहार बिधान परिषद् के **सभापति, अवधेश नारायण सिंह** ने कहा कि लोकतंत्र की पाठशाला में पंचायत चुनाव प्रथम कड़ी है। उन्होने अपने संबोधन में प्रतिभागियों से कहा कि लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए आपका कार्य सराहनीय है। एडीआर की अपर्णा लाल ने चुनाव सुधार के संबंध में बताया एवं एडीआर के कार्यक्रमों की जानकारी दी। बिहार इलेक्शन वाच के राजीव कुमार ने बिषय प्रवेश एवं अतिथियों का स्वागत किया।

सेमिनार के दूसरे वक्ता एवं बिहार टाइम्स के संपादक **अजय कुमार** ने कहा कि बिहार में पहली बार पंचायत चुनाव में नागरिक संगठनों का हस्तक्षेप देखने को मिला और कई गड़बड़ियो को रोकने में सफलता भी मिली। इस प्रकिया को निरंतर सुचारु रखने कि जरुरत है ताकि पंचायत स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार पर लगाम लग सके। उन्होने कहा कि पंचायत के चुनाव में भले ही राजनीतिक दलों ने सीधे तौर पर अपने उम्मीदवार खडे नहीं किए, लेकिन हार जीत के खेल को लेकर ग्रामीण इलाकों में पार्टी संगठनों के कार्यकर्त्ता सक्रिय थे और इसमें राजनीतिक दलों की भूमिका अहम थी। चुनाव मे पैसे के खेल से भी इंकार नहीं किया जा सकता है । उम्मीदवारों ने चुनाव जीतने के सभी पैंतरे आजमाये जिसमें सबसे बडी भूमिका पैसों की थी। वहीं मुद्दे पीछे छूट गए थे। पंचायत के चुनाव में मुद्दों का नहीं होना बिहार पंचायत चुनाव की प्रकिया सबसे बडी विफलता कही जा सकती है। हालांकि पढे– लिखे लोगों ने भी भाग्य आजमाया और बडी संख्या में नए लोग जीत कर आए, लेकिन नए लोगों का काम कैसा होगा यह तो वक्त ही तय करेगा। चुनाव को मॉनिटर करने की कोई व्यवस्था नहीं थी। मो0 जाहीद ने कहा कि सामान की तरह वोट खरीदे गए। दो –दो हजार में एक–एक वोट खरीदे गए। उन्होने कहा कि नामांकन से लेकर मतगगणना की अवधि का समय एक सप्ताह से अधिक नहीं होनी चाहिए। वरिष्ठ पत्रकार मणिकांत ठाकुर ने पंचायत चुनाव में बिना लोभ –लालच के जाति धर्म से उपर उठ कर विकास के नाम पर अच्छे और सच्चे प्रत्याशी को चुनने पर बल दिया। उन्होने कहा कि पंचायत चुनाव की सबसे बडी समस्या जातीय आधार पर चुनाव का होना है। उन्होनें कहा कि भ्रष्टाचार हो रहा था और सरकारी महकमा सोया हुआ था। एक करोड खर्च कर पांच करोड कमाने के नुस्खे के साथ उम्मीदवार मैदान में थे। वैसे लोगों को सर्पोट करने की जरूरत है जो अभी भी नैतिक रूप से गए –गुजरे नहीं है। ऐसे लोगों को जोडकर मुहिम चलाने की जरूरत है। भ्रष्टाचार के नए –नए रूप देखने को मिले। पीयूसीएल के अध्यक्ष फादर मंथरा ने कहा कि इंसान को अपना अधिकार मिले यह सोचने की जरूरत है। अन्य राज्यों के अच्छे कार्यो को विस्तारित करने की जरूरत है। गांव –गांव में चर्चा करने की जरूरत है। चौपाल मे चर्चा करने की जरूरत है। अच्छे उम्मीदवारों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। पत्रकारिता में भी इसका इस्तेमाल होना चाहिए। इसे जनअभियान का रूप

दिया जाना चाहिए। उन्होने जागरूकता के साथ रिसर्च पर भी बल प्रदान किया। जागरूक नागरिक ही बदलाव ला सकता है। समाज के अंतिम व्यक्ति को जागरुक करने कि आवश्यकता है। पटना उच्च न्यायालय की मधु श्रीवास्तव ने कहा कि बगैर कोर्ट के दखल अंदाजी के कोई फैंसला या निर्णय होता ही नहीं है। जहां भी गलत हो वहीं आवाज उठाएं। मधु श्रीवास्तव ने कहा कि समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए सिविल सोसाईटी को आगे आना होगा।

राजनीति दलों के प्रतिनिधियों की राय

राजेन्द्र कुमार राम –राष्ट्रीय जनता दल,(सचेतक, बिहार विधानसभा, पटना) –पंचायत स्तर पर मुहिम चलाने की जरूरत है चुनाव के पूर्व लोगों को जागरूक करने की जरूरत है। पार्टी को जीताऊ उम्मीदवार ही चाहिए। पुंजीवादी व्यवस्था मे ंगरीब उम्मीदवारों का जीत पाना वाकई मुश्किल होता जा रहा है। उन्होंने कहा कि समाज में यदि कोई अच्छा कार्य करे तो बाहुबली सिकस्त खाते हैं । निष्पक्ष चुनाव भी हुए है यदि निष्पक्ष चुनाव नहीं होते तो ईमानदार और गरीब उम्मीदवारा चुन कर नहीं आते । इस पंचायत के चुनाव मं ंपूंजी का प्रभाव देखा गया । राजेन्द्र कुमार ने कहा कि चुनाव में गरीबों के वोट खरीदे जा रहे हैं, जो लोकतंत्र के लिए सबसे बडा खतरा है।

नीतीन नवीन –भारतीय जनता पार्टी, (सदस्य बिहार बिधान सभा, पटना)

वहीं विधायक नीतीन नवीन ने कहा कि पंचायत चुनाव दल गत आधार पर कराने कि जरुरत है। मत प्रतिशत बढाने के लिए मतदाताओं को जागरुक करने कि जरुरत है। उन्होंने कहा कि दूसरे राज्यों में बडे अधिक खर्च होते है। बिहार इस मामले में पीछे है। उन्होने पार्टी के चिन्ह पर पंचायत के चुनाव कराने पर बल दिया। उन्होने कहा कि इससे जबावदेही तय होगी और पार्टी का नियंत्रण होगा। इससे नगर निगम के काम को भी एक दिशा मिलेगीं । वार्ड की नीति बनती है, लेकिन सोच नहीं दिखती है। नवीन ने अनिवार्य मतदान पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि मतदान के प्रति लोगों में अरूचि हैंइसलिए मतदान को अनिवार्य कर देना चाहिए। उन्होंने कहा कि जनता भी अपने कर्तव्यों के प्रति जबावदेह हाने चाहिए। साठ प्रतिशत मतदाता मतदान ही नहीं करते है। परिवर्तन हो रहे है, लेकिन बिहार में इसकी रफ्तार धीमी है। उन्होने कहा कि पहले बेलगाम खर्चे होते थे, लेकिन अब खर्चों में कमी आयी है। उन्होंने कहा कि अयोग्यता के प्रश्न पर तीन माह के अंदर समाधान निकलना चाहिए ं एक निश्चित अवधि के अंदर कोर्ट को फैंसला देना चाहिए। वोटर लिस्ट में भी व्यापक गडबडियां है। उन्होने कहा कि पंचायत चुनाव को भी विधान सभा एवं लोकसभा के तर्ज पर ही चुनाव कराया जाना चाहिए। इस मामले में राज्च निर्वाचन अयोग पीछे है।

सत्यानंद शर्मा–(महासचिव, लोकजनशक्ति पार्टी) –लोजपा के महासचिव सत्यानंद शर्मा ने कहा कि सब से पहले भ्रष्टाचार पर चोट करने कि जरुरत है जो कि चारो तरफ व्याप्त है। साथ ही उन्होने दलों के अन्दर आन्तरिक लोकतंत्र की ओर भी इशारा किया। उन्होंने कहा कि दलों मे ंनैतिककता को लेकर सवाल खडे हो गए हैं। उन्होंने दलों के आधार पर पंचायत चुनाव नहीं कराने पर बल दिया। इससे ज्यादा गडबडियां होंगी।

विभिन्न जिलों के प्रतिनिधियों की भागीदारी एवं राय (खुला सत्र)

मो0 कमाल पाशा– (वैशाली) तंत्र द्वारा चुनाव निष्पक्ष नहीं हो रहे है। देवेन्द्र सिंह (वैशाली) मतगणना में व्यापक गडबडियों की शिकायत पूरे बिहार में सुनने को मिली। **नंदलाल मेहता–(मोकामा, पटना)** जनता ही सर्वप्रथम गलती करती है, इसलिए जनता के बीच जागरूकता अभियान निरंतर चलानी होगी।

देवकुमार–(समस्तीपुर) संमस्तीपुर के इलाके में दबंग पंचायत प्रतिनिधि एवं स्थानीय प्रशासन के मिलीभगत से लोकतंत्र का गला घोंटा गया। दबंगों ने कमजोर एवं समाज के हाशिये के लोगों को डराने –धमकाने का प्रयास किया। **अजीत कुमार (गोविन्दपुर, नवादा)** – चुनाव में व्यापक स्तर पर भ्रष्टाचार किया गया। हमारे यहां 25/4/16 को मतगणना होना था, लेकिन हुआ एक दिन पूर्व ही। जिसकी सूचना 24 घंटे के अंदर दी गयी। **विनय कुमार** –(मोतीहारी, पूर्वी चंपारण)– जसौली पट्टी पंचायत में अधिक पैसे बाले उम्मीदवार हार गए जबकि नए एवं कम पैसे खर्च करने बाले उम्मीदवारों को जीत मिली। लोगों में मतदान एवं चुनाव को लेकर समझदारी विकसीत करनी होगी। स्कूल कॉलेजो एवं मतदाताओं को जागरूक करना होगा। साथ ही पंचायतों के विकास को लेकर भीबात चीत करनी होगीी ताकि आने बाले पंचायत के चुनाव में विकास के एजेडे के साथ चुनाव हो सके। **शारदा श्रीवास्तव** (भागलपुर)– मतदान एवं पंचायती राज व्यवस्था के प्रति गांवों में जागरूकता अधिक थी अपेक्षाकृत शहरों के । **अमरनाथ ठाकुर–** (पटना)– काउंसिलिंग के समय गडबडियां अधिक देखने को मिलती है। कानून व्यवस्था की समस्या तो है, लेकिन जानकारी एवं जागरूकता के अभाव में गडबडियां अधिक देखने को मिलती है। वोटर लिस्ट में व्यापक गडबडियां है। वोटर आई कार्ड को आधार कार्ड से जोडने की व्यवस्था हो। उन्होंने कहा कि सकारात्मक बात यह हुई है। कि पैसों बालो की जगह अपेक्षाकृत कम पैसों बाले एवं नए उम्मीदवारों पर भरोसा किया गया । प्रवीण कुमार (पीयूसीएल) ने कहा कि मानवाधिकार की बात भी होनी चाहिए। **नंदलाल सिंह** (जमुई) ने चुनाव के बाद हत्या की घटनाओं को निष्पक्ष चुनाव से जोडते हुए कहा कि यह स्पष्ट है कि बडे पैमाने पर चुनाव में प्रशासन एवं दबंगों के मिलीभगत की वजह से समाज में तनाव बढा है फलस्वरूप चुनाव के बाद हत्या का अंतहिन सिलसिला चल पडा। कन्हैया सिंह (समस्तीपुर) ने मतगणना में गडबडी एवं प्रशासन द्वारा दुर्व्यव्यवहार के संबंध में जानकारी दी। उन्होने बिहार इलेक्शन वाच द्वारा न्यायिक हस्तक्षेप की उम्मीद प्रकट की। सेंमिनार में बिहार के विभिन्न क्षेत्रो से आए संजय गुप्ता, (नवादा) बब्लू सिंह (समस्तीपुर) मानती वर्मा (पटना) मणीकांत कुमार (नवादा) आदि ने अपने– अपने विचार व्यक्त किए।

नेटवर्क की भूमिका एवं सबलीकरण (अंतिम सत्र)

ऐसे प्रत्याशियों ने भी जीत दर्ज की है जिसने अत्यंत ही कम पैसों मे ंचुनाव जीते। वैसे लोगों के साथ तालमेल स्थापित करने और सकारात्मक तथ्यों को आगे बढाकर बदलाव की दिशा में प्रयास किए जा सकते है। अलग– अलग हिस्सों में बदलाव के चिन्ह दिखे हैं। उन तमाम कमजोरियों के बीच पत्रकारिता ही है जो आपको खुराक देती है मामले उजागर करने का कार्य करती है। छोटी– छोटी चीजों से बडी ताकत का निर्माण होता है। इस स्थान पर बैठकर विमर्श भी इसी उम्मीद से कर रहे है कि भविष्य में बदलाव होंगे। इन बाधाओं के बीच जजबा मरा नहीं है। जरूरत उन्हें संगठित करने की है। नए नजरिये व तकनीक को अपनाना होगा। युवाओं को साथ जोडना होगा। युवाओं में राजनीतिक चेतना जगानी होगी। चुनाव के बाद नये प्रतिनिधियों के बीच मुद्दों को लेकर विमर्श व प्रशिक्षण देना होगा। साथ ही ग्राम सभा के कियान्वयन के प्रति नए नजीर स्थापित करने के प्रयास करने होंगे साथ ही अभी से ही कुछ पंचायतों में मुद्दों एवं सच्चे व अच्छे को विजय दिलाने की दिशा मे ंठोस कदम उठाने होगें। उन्होंने नगर निकायों के चुनाव में हस्तक्षेप की अपेक्षा की । वैसे लोगों को सर्पोट करने की जरूरत है जो अभी भी गए बीते नहीं है। ऐसे लोगों को जोडकर मुहिम चलाने की जरूरत है।

धन्यवाद ज्ञापन विनय कुमार ने किया।

समाप्त